निरंकार श्रीवास्तव

# सच्चा रक्षा बंधन

राखी का त्योहार की यूं तो एक तिथि नियत है, परंतु उसका उत्साह और इंतिज़ार महीनों पूर्व शुरू हो जाता है। बाजार भी रंगबिरंगी रखियों से साज जाते हैं , और हर उम्र की लड़कियां व महिलायें राखी खरीदिती दिख जाती हैं। इधर घरों में परिवारों में भी एक उल्लास का वातावरण हो जाता है, मौसम भी इन दिनों में सुहावना हो जाता है।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी राखी आने के कुछ दिन ही बचे हैं। पिछले सप्ताह मैं भी अपनी पत्नी के भाइयों के लिए राखी वाले लिफाफे speedpost करने post office पहुंचा। क्या देखता हूँ कि स्पीडपोस्ट विंडो पर एक लंबी कतार है। करीब 14–15 लोग मेरे आगे खड़े अपनी बारी आने का बेसब्री से इंतिज़ार कर रहे हैं। उनमें से अधिकतर महिलायें अपने मेहंदी लगे हाथों में अपने भाइयों को राखी पोस्ट करने के लिए खड़ी हैं. तभी एक सफेद साड़ी पहने वृद्ध महिला एक हाथ में लिफाफा व दूसरे हाथ में छड़ी लिए का आगमन हुआ. आते ही लंबी लाइन देख कर लगीं बड़ बड़ करने । “मुझे लाइन में खड़े होना बिल्कुल भी ठीक नहीं लगता । कम से कम आजकल के भीड़ वाले दिनों में postoffice वालों को 2 –3 और काउन्टर खोलने चाहियें या वरिष्ठ नागरिकों के लिए अलग लाइन होनी चाहिए”।

उन्हे हैरान परेशान देख मेरे पीछे लाइन में खड़े व्यक्ति ने उन्हे पास में रखी बेंच पर बैठने को कहा। दूसरे ने उन्हे अपनी वाटर बोतल से पानी पीने को दिया। तभी उनसे भी पीछे खड़े सज्जन ने कहा , ‘क्यों न आप हम से आगे जाकर अपनी राखी पहिले पोस्ट कर दें “। मेरे साथ औरों ने भी समवेत स्वर से कहा, कि पहिले आप पोस्ट करदें। आखिरकार थोड़ी झिझक के साथ उन महिला ने अपनी राखी पोस्ट कर दी।

उसके बाद उन्होंने अपनी छड़ी पास की बेंच पर रख कर हम सब के सामने हाथ जोड़ कर भाव विहल सी खड़ी हो गईं। कुछ पल तक वे कुछ ना बोल सकीं । फिर एक गहरी सांस ले कर बोली, “जिन मेरे दो छोटे सगे भाइयों को अभी 2 राखी पोस्ट की है, वो इसे मिलने की सूचना भी नहीं भेजेंगे, और राखी वाले दिन जब मैं उनको फोन करूंगी, तब ही पूछने पर बताएंगे कि राखी उन्हे मिल गई है”। एक आप लोग हैं, मेरा इतना ध्यान व मान रखा। आप सब मेरे सगे भाई बहिनों से भी ऊपर हो। भाई तो वही है जो आड़े वक़्त बहिन के काम आए। मेरी तो रक्षा बंधन आज ही मन गई। उन्हे अपनी साड़ी की कोर से अपनी आखें पोंछते देख हम में कइयों के नेत्र सजल हो गए ।

मुझे भी उनमें अपनी इकलौती छोटी बहिन की छवि दिखी, जिसे आज से पच्चीस वर्ष पूर्व भगवान ने अपने पास बुला लिया।